साधना पथ

—निर्मल जी

निर्मल

※

प्रत्येक मानव साधना रूपी मार्ग का अनुसरण
करके अपनी सोई आत्मा में जाग्रति
ला सकता है। परन्तु साधना
हीन होना ही चौरासी में
भटकना है।

—श्री नारायण महाप्रभु

प्रकाशक :—
शोभा कान्ती भार्गव, ३१ ए कचहरी रोड,
इलाहाबाद (उ० प्र०)

प्राप्ति स्थान :—

सम्वत २०२७] [सन् १९७०

साधना पथ

रसमय प्रभु का रसमय पथ अति दुरूह एवं वीहड़ है। देखने में सुगम चलने में सुगम लेकिन पहुँचने में दुर्गम है। जिसने एक बार उस रसिक, ज्ञानमय तत्व स्वरूप प्रभु के श्रेय का रसास्वादन किया, उसके सामीप्य के सुखद संग का अनुभव किया, उसके प्रेम में रसावोर हो गया, वह सदा सदा के लिये उसको अपनाना चाहता है, किन्तु अपनाये कैसे ? रसिक राज का प्रेमास्पद बने कैसे ? यह प्रश्न साधक के चित्त को विक्षिप्त बना देता है। वह निराशा की लहरों में गोते लगाने लगता है, वह पराजित सा हो जाता है। जीव एव शिव के सम्मिलन का दुरूह प्रश्न है। अन्तःकरण में अन्तरद्वन्द होने लगता है। जीव समझ नहीं पाता वह क्या करे क्या न करे। कौन-सा पथ वह अपनाये, किस साधन को वह करे जिससे उसका इष्ट उसमें समा जाय। वह उसके सामीप्य का आनन्द एवं उसके अमरू प्रेमानन्द का अनुभव कर सके। इन्हीं तत्वों को इस "सावना पथ" नामक पुस्तक में समझाने का प्रयास किया गया है। प्रभु प्राप्ती के तीन साधन हैं-कर्म योग, भक्ति योग एवं ज्ञान योग।

इस छोटी सी पुस्तिका में तीनों तत्वों पर प्रकाश डाला गया है। अनन्त विभूषित तत्व स्वरूप मेरे गुरुदेव श्री १००८ नारायण महाप्रभु की अनुपमेय कृपा से ही यह अथाह भवसागर गऊ के खुर के सदृश हो गया।

गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर श्री दीनानाथ प्रभु के चरणों में उनकी महती कृपा का प्रसाद उन्हीं को समर्पित है।

—निर्मल

एक परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ "साधना पथ" का लेखिका प्रातः स्मरणीय श्री श्री १००८ श्री नारायण महाप्रभ को अत्यन्त प्रिय शिष्या भगनी निर्मला जी हैं।

भगनी निर्मला जी प्रयाग विश्व विद्यालय की स्नातिका थीं। विद्याध्ययन के पश्चात पूर्व जन्म के शुभ संस्कार एवं संचित पुण्यों के फलस्वरूप आप श्री श्री १००८ श्री नारायण महाप्रभु के संसर्ग एवं संपर्क में आकर गुरुदीक्षा ली तथा पारिवारिक एवं सांसारिक सुखों का परित्याग कर त्याग मय एवं संयम मय जीवन को अपनाया। भगवान श्री नारायण महाप्रभु की महती अनुकम्पा से इस कठोर मर्य साधन में बड़ी सफलता पूर्वक अग्रसर होती हुई वर्तमान जीवन पथ में निर्विघ्नता पूर्वक अग्रसर हो रही हैं।

भगनी निर्मला जी गत प्रायः सोलह वर्षों से कठोर तम तपस्वी जीवन यापन कर रही हैं। और आचार-विचार तथा व्यवहार में भी अद्वितीय हैं। वर्तमान समय में आपने अन्न

कों पूर्ण रूपेण त्याग दिया है। केवल एक ही समय में कच्चा फल एवं दूध लेती हैं। क्रोध, आलस्य, माया, ममता तो प्रायः वहन जी के पास आने में भय खाती हैं आप इन क्षुद्र विकारों से रहित चन्द्र सम उज्वल जीवन यापन कर रही हैं।

वर्तमान काल में गुरु आज्ञानुसार धर्म प्रचारार्थ आश्रम की अन्य बहनों एवं गुरु भगवान के साथ-साथ आपको जनता हेतार्थं दूर-दूर देशाटन भी करना पड़ता है। और अनेकों असुविधायें आने पर भी अपने साधना पथ में कभी शिथिलता नहीं आने देती।

बहन निर्मला जी का बाल जीवन एवं विद्यार्थी जीवन जिन व्यक्तियों ने देखा है वे इनके वर्तमान तपस्वी जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते।

"साधना पथ" से पूर्व भी आपके रचित कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं जिनको पठन करके जिज्ञासु भक्तों का हृदय गुरु भक्ति की ओर अग्रसर हुआ है एवं धर्म प्रचार में बड़ी सफलता मिली है। और अहिन्दी भाषी जनों ने भी ग्रन्थों का हृदय से स्वागत और पठन किया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ भगवान श्री नारायण महाप्रभु की प्रेरणा एव अनुकम्पा का ही एक उदाहरण है और धर्म प्रचारार्थ भक्तों के

हित के लिए श्री भगवान गुरुदेव के संरक्षण में बहन निर्मला जी ने मुद्रित करवाया है और आशा है भक्त गण इस पद्य ग्रन्थ का अध्ययन कर इस अपार संसार सागर से पार हो सकेंगे ।

आषाढ़ शुक्ला
गुरू पूर्णिमा
संम्वत २०२७

निवेदिका :—

शोभा कान्ती भार्गव

श्री श्री १००८ श्री नारायण महाप्रभु जी

आरती

आरती सदगुरु प्यारे की ।

जय भक्तन प्राण अधारे को ।।

दिखाती सुन्दर मुक्ती का मारग ।

धर्म कराती होता पुरुषार्थ ।

जगत जन का होता उद्धार ।

आये हम शरण, भक्त भय हरण, सुकोमल चरण ।

जय जय दीनन हितकारी को ।। आरती० ।।

सुख मिलता उनसे अविराम ।

शरणागत पाते तुमसे विश्राम ।

शरण आये को देते सुख धाम ।

हरो दुख द्वन्द, मिले सुख कन्द कटे भव फन्द ।

जय जय दयाल रघुराई को ।। आरती० ।।

धर्म ध्वजा का किया प्रसार ।

पृथ्वी का तुमने किया उद्धार ।

खोलता तू शान्ती का द्वार ।

सबको दे प्यार, जगत उजियार, है जीवन प्रान।

जय जय प्रेम प्यारे को ।। आरती० ।।

जगती का तूने हरा है भार।

दुष्टों का तूने किया संहार।

तुम ही हो जग के पालन हार।

अखिल ब्रह्मांड के तारन हार, मुक्तो का द्वार ।।

जय जय नारायण दुखहारी की ।। आरती० ।।

भक्त की पुकार

चरण समर्पण दास प्रभु, नाम दया का धाम
हृदय तुम्हारी कहाँ गयी, राखो अपना नाम

जगत हेतु नर भयो, नारायन राख्यो नाम
सद्गुरु केशव के सुत, कैसे छोड़ी बान

नाम तुम्हारो जो रटे, निशवासर दिन रैन
प्रेम आपनो देत हो, यही तुम्हारी बैन

चाह नहीं कुछ जगत की, तुम तो अन्तरयामी
विरद तिहारी कहाँ गई, कैसी हो गई वानी

सद्गुरु तेरा नाम है, केशव सुत के अवतार
तत्व ज्ञान ही सार है, मिटे हृदय अंधियार

सबसे बड़ा सद्गुरु, वासे बड़ा न कोई
निराकार सगुण भयो, मोहे बतावे सोई

आज दुखी यह जगत है, नाम से तेरे दूर
नारायण गुरु ज्ञान से, सब होवे भरपूर

राम रूप सब जगत है, गुरु दिलाये ज्ञान
सेवा करो निष्कामता, आते हैं भगवान

प्रेम नदी अति दूर है, विरला पहुँचे पार
गुरु भक्ती निष्ठा करो, गुरू बतावे मार

समता दिया जिला ले, मिले ज्ञान भक्ती की ज्योति
आपही आप प्रभु मिले, हर्ष हृदय में होत

सब में रमता राम है, गुरु से आतम जान
कर्मन में तू क्या फँसे; अपने को पहिचान

दृढ़ निश्चय निर्मल हृदय, गुरु को है ये देन
पराभक्ती ही रत्न है, खोलो अपना नैन

तत्वज्ञान ही रहा है, सांचा सद्गुरु सेव
गुरु दया पतवार से, निजकाया को खेव

गुरु ब्रह्मा और विष्णु हैं, तीन रूप के हैं एक
द्वैत भाव को मेट दे, जगे ज्ञान विवेक

जगत कर्म को करले, मन राखो गुरु माहि
कमल सरोवर में रहे, जल न छुये ताहिं

मेरी-मेरी तू करे, मेरी में कछु नाँहि
सर्व समर्थ सद्गुरु, प्रलय दृष्टि से होहिं

गुरु दयालु अति हैं, जप ले गुरु का नाम
डोरि प्रबल विश्वास के, पूरण होये काम

जो तू चाहे शान्ति को, हिय में गुरु को धार
नाम जपन कर अहर्निश, हो जाय उद्धार

पतिव्रता सच्चा सोई, देखे गुरु को ओर
एक आस विश्वास से, निरखे चन्द्र चकोर

प्रेम शिरोमणि गुरु है, ज्ञान नैन सिरमौर
पाँच तत्व गुरु तीन से, रहते हैं वे और

सदगुरु ज्ञानी और हैं, मंत्र दिलावत और
दर्शन से हिय होत है, निर्मल हिय में भोर

नारायण गुरु का नाम है, रूप ज्ञान अनमोल
नाम जपे से दुख कटे, सुख मिलता ब तौल

चार वेद छः शास्त्र को, जानो गुरु की वानो
वेद शास्त्र से वे अलभ, उनको उनसे जानो

धर्म दृष्टि से नहीं दीखता, ज्ञान दृष्टि हिय ला
वेद शास्त्र अरु कर्म से, हिय में शुद्धि ला

ब्रह्म ज्ञान जब हिय जगे, जगत उजारा होय
नारायण साँचा साँइया, हृदय अंधेरा खोय

कोई नहीं इस जगत का, तेरा सच्चा मीत
सोच समझ ले तू जरा, करले अपना हीत

किससे प्रीती मैं करूँ, कोई न दीखे साँच
नारायण प्रीत मन वसे, साँच लगे न आँच

दुनियाँ है यह बहुमुखी, बहुरुपिया यह संसार
गुरु की सेवा में रहो, जग से उतरो पार

गुरु मेरो धन्य हैं, धन्य-धन्य तुम नाथ
निर्मल तेरो ऋणी है, सदा रहूं तुम साथ

प्रेम पियासो नैन है, पिय मिलन को आस
सांस-सांस निष्ठा बढ़े, चरण कमल की प्यास

गली अनोखी प्रेम की, प्रेम सिंधु रम जाय
गुरु की पइयाँ तू लगे, नारायण मन भाय

परम पति तो गुरु हैं, ज्ञान सेज में सोय
सांस-सांस में नाम जपो, अपने को बिलगोय

दीन बन्धु हैं व सदा, कारन रहित कृपाल
शुद्ध हृदय से भजन कर, करिहें वे प्रतिपाल

कृपा प्रसाद अति अगम, लाख लोग तर जाय
अवसर सुन्दर सुगम है, काहे तू भरमाय

ठाम-ठाम में ढूंढ़ता, हरि न मिला [illegible] ताहिं
योंहि उमरिया जायेगी, प्रभु न मिले वन माहिं

हरि सर्वत्र समान है, व्याप रहा जग माहिं
ज्ञान नैन को खोल ले, तत्क्षण ही मिल जाहिं

काल कर्म को दोष दे, वृथा वाद विवाद
अब तो तू चेत जा, हो जाय आबाद

नर नारि कुछ है नाहिं, एक आत्म चहु ओर
ज्ञान दृष्टि को गुरु दे, प्रभु दीखे सब ओर

देवी देवता सब एक हैं, नाम रूप अनेक
कर्म विविध करन को. एक भयो अनेक

सम दृष्टि समदीप नहीं, ब्रह्म उजारु होय
हिय दीपक ऐसा जरे, अंध जन्म को खोय

प्रेम पियासे नैन हैं, राम रूप सम जान
प्रभु आयेंगे दौड़कर, करले सच्ची आन

प्रेम का दांव लगाय दो, अर्पन कर दो मन
सद्गुरु खेल बतायेंगे, मिले तुझे भगवन

क्यों फिरता है तू दुखी, तू तो सुख को खान
ब्रह्म ज्ञान की ज्योति से, अपनु को पहिचान

सत्य सनातन तू पुरुष, निज कैसे विसराय
गुरु से निज को जान के, हिय आनन्द समाय

राम-राम सब कोई कहें, राम न जाने कोई
हर घट व्यापे राम हैं, सच्चा जाने सोई

दुर्लभ नहीं कछु जगत में, गुरु कृपा के टेक
गणिका जैसा तार दो, जरा करो विवेक

उत्तम प्रीती दिन-दिन बढ़े, उसमें लागे न घाट
नाम जपे गुरु नाम का, प्रेम न देखे बाट

प्रेम पयोधी गुरु हैं, पार न पावे कोई
भव सागर की अगम नहीं, गुरे करे सो होई

गुरु नाम है कल्पतरु, पूरी बाधा होय
सब कोई सुमिरन करे, गुरु बतावे सोय

मानव तन दुलभ अति, पाप पुन्य ही बाट
सद्गुरु सेवा तू करे, वही उतारे घाट

सुमिरन हरि का न किया, विरथा जग में खोय
अंत समय जब आयेगा, मल-मल हाथ को रोय

जग का धंधा धल है, चेत रहो जग माहि
गुरु बिना कुछ न बने, गुरु हो है समझाहि

पतिव्रता ही धर्म है, सच्ची प्रीति को रीति
एक पती के प्रेम में, रहो सदा सप्रीति

प्यासे रहे सदा दृग, प्रभु दर्शन की आस
नाम रटन उनकी रहे, जब लग घट में सांस

विरह सिंधु अति ही कठिन, कोऊ-कोऊ उतरे पार
नारायण गुरु दया करो, होय न जग में हार

धन बल तपबल कुछ नहीं, तत्व ज्ञान ही सार
सद्गुरु तत्व ज्ञान के, साँच बतावन हार

पर उपकारी सद्गुरु, विरला जाने कोई
निर्मल शुद्ध हिय में, ज्ञान समागम होई

सौंपा जीवन प्रभु को, उनके हाथ बिकाय
पतित उद्धारन गुरू है, जैसे बने बनाय

ज्ञानी जन उन्हें जानिये, ज्ञान रूप निष्काम
कण-कण में प्रभु देखते, मिले हृदय विश्राम

इन्द्री मन से गुरु परे, स्वय स्वरूप सुजान
दर्शन से ही तम नसे, करे जगत कल्यान

काम क्रोध को त्याग दे, शत्रु इसको जान
नारायण गुरु सेव ले, ले ले शान्ति दान

जो जन ब्रह्म जानते, कबहूं न भीने दुख
हर्ष शोक में सम रहे, रहे सदा गुरुमुख

प्रेमी जन लाखो मिले, प्रीत न जाने कोय
साँचा प्रेमी वही है, प्रीतम में विलगोय

कर से कर लो काम को, मुख से ज[illegible] लो नाम
मन मुख को एकै करौ, बन जाय सब काम

हरि मिलन दुर्लभ नहीं, जो सच्चा गुरु पाय
सद्गुरु उसको जानिये छन में हरी मिलाय

विषय त्याग अति ही कठिन, ज्यों उल्टी नदी वहाय
सद्गुरु हरी मिलाय दे, वाहर विषय हटाय

सद्गुरु वाणी अति ही सरस, ज्ञान मेरु और महान
विज्ञ पुरुष ही जानते, कैसे करूँ वखान

नारायण पद वन्दन करूँ, केशव सद्गुरु सहस प्रनाम
अष्ट सिद्धी और चार फल, पल में देवे ज्ञान

सद्गुरु प्रेमी धन्य हैं, तीन लोक में तू जान
मात पिता सब तरत हैं, इसको सत् ही मान

पर से पर सद्गुरू हैं, जगत सदाशिव के रूप
विरला कोई जानता, होवें ज्ञान स्वरूप

गुरु ही आदि-अनादि है, सत्य सनातन जान
तत्वज्ञान ही सार है, निज को तो पहिचान

जन्म अनेकों में किया, पुन्य लाखन जान
पाया सद्गुरु साइयां, नारायण पहिचान

पालक पोषक गुरु हैं, जोवन खेवन हार
जो निन्दा उनकी सुने, कभी न होवे पार

भवसागर की अगम नदी, सद्गुरु मांझी जान
विन माझी नय्या वृथा, नारायण दीन्हा ज्ञान

अधम उधारन तू गुरु, भये हजारों पार
मुझ जैसा यदि तार दे, तो जानूं करतार

जग में गुरु वहुत हैं, नाम रूप गुन खान
सद्गुरु विरला जगत के, आत्म ज्ञान की खान

तीरथ तुम लाखो करो, पुन्य वहुत ही होय
सच्चे आत्म ज्ञान विनु, कवहूँ न मुक्ती होय

जीव शीव के वीच में, माया नारि ठाड़ि
ज्ञान विना निज रूप का, वनां रहा अनाड़ो

क्या कहूँ मैं गुरू वड़ाई, इनकी महिमा कहेन आहि
मन इन्द्री के घर वतावे, ज्ञान गुरू ही सुव समझाहिं

गंगा अति ही पवित्र है, शीतल मन को होय
ज्ञान गंग उससे बड़ो, मन का मैला धोय

झूठा यह संसार है, झूठी याकी बात
जितना यामें तू फँसे, उतना पाये घात

चार दिनों का जीवना, कर ले तू शुभ कर्म
दुनिया के फरफंद से, हो जा तू निष्कर्म

दुनिया है यह बहुमुखी, अनेक भाव विचार
सद्गुरु को तुम खोज लो, तुझे लगावे पार

इस माया भरी दुनियाँ में

इस माया भरी दुनियां में,
किसी का कोई नहीं ।
जरा नैन को पसार के,
देख ले इस जग को ।
अपने रंग में सब प्यारे,
इसका कोई भरोसा नहीं ।।
इस माया.........।।

इक दिन बैठ के जरा भाई,
सोचो मगन में तुम ।
जगत मायापुरी है,
इसमें कुछ साँच नहीं ।। इस......।।

पंच तत्व की काया है तेरी,
जल जायेगी इक दिन ।
कुछ तो कमा ले बन्दे,
सदा यहाँ पर रहना नहीं ।। इस.........।।

निर्मल मन से गुरू को,
कर ले तू सेवा बन्दे ।
नारायण गुरू मिले हैं,
अब कुछ फिकर नहीं ।। इस......।।

सद्गुरु की दया से ज्ञान ज्योति जगे

सद्गुरु की दया से ज्ञान ज्योति जगे
जीवन का दुख द्वन्द मिटे और प्रेम रूप बने !
सम्पूर्ण जगत के कारण हो
विश्व चराचर के धारण हो ।
तत्व दृष्टि से विरला लखे !
सद्गुरु………।

नित्य निरन्तर जो मुझे भजते,
जीवन का सब कुछ अर्पन करते ।
तब तू उसका बने !
सद्गुरु……।

एक बार शरन जो तेरी लेते,
निश्चल भक्ती उसको देते ।
करुणा पुंज तू प्रेम करे,
सद्गुरु……।

नाशवान् यह जगत सही है,
निर्मल हिय के प्राण तुही है ।
नारायण का ध्यान करे ! सद्गुरु………।

गुरु देव दया करो दीन जने

गुरु देव दया करो दीन जने ।

हम शरण तुम्हारी आई हैं ।।

चरणों से कभी दूर न हो
हिय में किसी से प्रीत न हो ।
भक्तन का तू ही सुधार करे ।।.........।।

युग-युग के हिय में पाप भरे
संस्कार का बेड़ी करे
दर्शन सब संताप को हरे ।। हम.....।।

पूजन साधन हो नाहीं कोई
हिय आज्ञा गुरु सेवी होई
दया दृष्टि की विन्दु झरे ।। हम.....।।

कर्म ज्ञान भक्ती सुख साधन
शुद्ध हृदय से गुरु आराधन
प्रेम पुंज की ज्योति जरे ।। हम—...।।

नारायण गुरु खेवन हारा
पुकार करे भक्तन मझदारी
सर्व शक्ती तुम देव हरे ।। हम...—।।

क्या दे दोष तू दूजन को

क्या दे दोष तू दूजन को ।
इसमें किसी का दोष नहीं ।।

जन्म-जन्म के कर्म तुम्हारे
दता प्रति फल जीवन खारे
याद करो तुम प्रभु को प्यारे
भोग कटेंगे इसी के सहारे ।। क्या ।।

निज कर्मन से भाग्य वना है
शत्रु मित्र नहीं कोई जना है
गुरु ही कटाये दुख के भारे
तत्व ज्ञान का बोध करारे ।। क्या ।।

भाग्य कोष कर रोना झूठा
देव किसी से कभी नहीं रूठा
जैसा बोओ वैसा काटो
विन्दु-विन्दु से घट का भराओ ।। क्या ।।

जोवन का कोई सार नहीं है
पानी में जैसी लहर नहीं है
महा प्रभु नय्या करे किनारे
चेत करो जीवन वीता ।। क्या ।।

गुरू ज्ञान की आग जली दिल में

गुरू ज्ञान की आग जली दिल में
क्या कोई इसको जानेगा
इक मधुर सी मूरत बसी मन में
क्या कोई इसे पहिचानेगा ।।

मैं हूं दासी प्रभु तव चरनन की
पद पंकज पर यह चढ़ी रहे
नैनन प्यास बुझाऊँ दिल की
क्या कोई इसको जानेगा ।।

तुम हो पपीहा प्रभ जीवन का
मैं हूँ पतंगा दीपक का
जीवन भया यह गुरू का
क्या कोई इसको जानेगा ।।

गुरू विनु कौन है जग में मेरा
देख लिया जग का सब डेरा
वैराग्य जगा हिय प्रभु का
क्या कोई इसको जानेगा ।।

नारायण गुरू मैं दास हूं तेरी
कष्ट हरो क्यों होती बेरी
माया हटे जीवत्व का
क्या कोई इसको जानेगा ।।

हे नाथ तुम गुरुदेव स्वामी

हे नाथ ! तुम गुरुदेव स्वामी ।

मम सदा तुम साथ हो ।।

मैं दीन हीन सेवक तेरा

करुणा के तुम धाम हो

निज दीन जन के संग स्वामी

निवास करते हो सदा ।। हे नाथ ।।

लाज रख लो हे गुरू जी

अवतार नित्य सर्वदा

पतवार नैय्या और खिवैय्या

तत्व के अभेदता ।। हे नाथ !

पार कैसे होंगे गुरुवर

ज्ञान दे अभय करो

को कृपाल तुम सदृश है

भक्तों के तुम देवता ।। हे नाथ ।

महान तुम सम कौन है

द्वारे न जाऊँ काहु के

शरण पड़ी मैं आपके
निर्मल हृदय आराधता ।। हे नाथ ।।

अगम अोचन्त नाथ तुम
अवतार भक्तन हित लिया
नारायण गुरु चरनन गहे
भक्तों के तुम हो सुख देता ।। हे नाथ ।।

जगत में है नहीं कोई तिहारा

जगत में है नहीं कोई तिहारा।
देख लिया मैंने जगत सहारा ॥

नाते अनेक मानो चाहे जग के
जगत में न रहो दिल को लगा के
मिथ्या है सब जगत अधारा ॥जगत……॥

कोई आज आये कोई कल जाये
दोनों के घर में साज सजाये
सारे जगत का यही पसारा ॥जगत……॥

खुशी तू होता कह वो मेरा
देख समझ ले कोई नहीं तेरा
संग जाये खाली धर्म तिहारा ॥जगत……॥

एक राह से रंक राव आये
एक घाट पै दोनों ही जाये
द्वैत का झूठा परदा डारा ॥जगत……॥

नारायण गुरु नित्य सुनाये
ईश जीव को एक कराये
मनुआँ फिर भी फिरे मतवारा ॥जगत……॥

जीवन ज्योति जगायो

जीवन ज्योति जगायो
गुरू ने मोहे सांच बतायो

मिट गई चाह हृदय की सारी
सतगुरू मिल गया खेवनहारी
आतम रूप लखायो ।। गुरू ने......।।

जन्म-जन्म की झूठी फांसी
क्या फिरता तू गया और कासी
माया में भरमायो ।। गुरू ने......।।

पांच भूत की वनी ये काया
माया में पड़ रूप भुलाया
शुद्ध स्वरूप करायो ।। गुरू ने......।।

अगम अपार भक्ती तिहारी
अपने को नहीं जाने अनारी
भरम का पर्दा हटायो ।। गुरू ने......।।

तत्व ज्ञान विन नर यो भटके
मृग तृष्ण से मृगया भटकें
नारायण सत्य बतायो ।। गुरू ने......।।

जरा प्रीत की रीत बता दे प्रभु

जरा प्रीति की रीति बता दे प्रभु
कौन विधा तुझे पाने की।

अतुल मधुर सुन्दर प्रभु प्यारे
नव नीरद सी शोभा वारे
अगम रूप मनोहरता की ॥ कौन ॥

सुनते हैं तुम दया के मूरत
जगत में रहते हुये वे उपरत
साधन ज्ञान नैन पाने को ॥ कौन ॥

मे निर्भर पावन चरणों की
आज्ञा मानो विधि सेवा की
परिपूर्ण स्नेह विधि पाने की ॥कौन॥

भक्त वत्सल हैं रे मन भावन
कृपा प्रसाद ही दुख नसावन
सत्य राह अपनावन की ॥ कौन ॥

हम हैं सेवक शरण तुम्हारे
नारायण गुरू हैं नाथ हमारे
अनुपम ज्ञान एक आपकी ॥ कौन ॥

सद्गुरु तुम स्वामी हो

सद्गुरु तुम स्वामी हो।
नाथ तुम आराध्य हो ।।

श्रद्धा से अपने दास है
चरणों के तेरे पास है
नाथ मैं कैसे रिझाऊँ
सोचो जरा तुम ध्यान कर ।। सद्गुरु ।।

आज बालक कह रहा है
गुरू दया का धाम है
फिर क्यों बेरी नाथ होती
अब तो उठाओ करुणा कर ।। सद्गुरु ।।

यज्ञ दान तप क्रिया से
मिलते नहीं तुम नाथ से
इक टेर सुनकर दर्द का
आये प्रभु तुम दौड़ कर ।। सद्गुरु ।।

अचिन्त पूरण काम हो
नरसिंह बनकर आये हो

कृपा करो गुरु जो
सत्य कहूँ कर्त्तव्य कर ।। सद्गुरु ।।

नारायण गुरु तुम राम हो
भक्तों के, हेतु आये हो
नय्या तुमने हाथ लीन्ही
अब सम्भालो आनकर ।। सद्गुरु ।।

गुरू है मेरो अगम देश को वासी

गुरु है मेरो अगम देश को वासी
उनकी महिमा अगम अविकारी
सकल जगत के वे क्षत्र धारी
महिमा कैसे गाऊं रे ।। अगम देश ।।

नाम रूप से गुरु हैं अतीत
गुरु दया से होवे प्रीति
गुरु में निष्ठा बढाऊँ रे ।। अगम देश ।।

भाग्य प्रबल ही उसका जानो
प्रबल शक्ती आतम् की मानो
चरण में भक्ती लगाऊँ रे ।। अगम देश ।।

सबल ज्ञान सद्गुरु का अमृत
जन्म-जन्म की कटनो संसृत
नारायण गुरु को ध्याऊँ रे ।। अगम देश ।।

दुनिया में नहीं कोई तेरा

दुनियाँ में नहीं कोई तेरा
झूठा खेल बिखेरा है।

माया में भरमाया प्यारे
असत्य जगत में डेरा डारे
समझ रहा तू जिसको तेरा
तेरा वो ही गैरा है ।। दुनिया ।।

स्वजन सनेही नाते दारी
अन्ध कूप की साधन सारो
अहम-अहम क्या कहता भाई
अंत गति क्या होती है ।। दुनिया ।।

व्यवहार जगत के करले चाहे
गुरूदेव दिखाते येही राहें
निष्काम रहो तू जगत में रहकर
जल में पंकज होते हैं ।। दुनिया ।।

नारायण गुरू अवतार धरायो
जन्म-जन्म को भेद बतायो
द्वैत भाव का भेद मिटाओ
माया कहती जाती है ।। दुनिया ।।

गुरु का ज्ञान निराला है

गुरु का ज्ञान निराला है ।
सत्गुरु का ज्ञान निराला ॥
ज्ञान दीप की ज्योति जले जहाँ
स्रोत मधुर-आनन्द वहे तहाँ
प्रचंड प्रकाश की ज्वाला ॥
गुरु का ज्ञान……॥

जीव नहीं रह सकता वहाँ पर
आता रूप का नाद जहाँ पर
कैसी अलौकिक शाला ॥
गुरु का ज्ञान……॥

प्रेमी प्रियतम एक हुये वहाँ
द्वैत भाव का ठाम नहीं जहाँ
आत्म ज्ञान उजाला ॥
गुरु का ज्ञान………॥

मोहन की छवि सुन्दर दर्शन
नर नारायण करते दर्शन
पी अमृत का प्याला ॥
गुरु का ज्ञान………॥

जिसे है लगन मिलने की

जिसे है लगन मिलने की ।

उसे क्या रोक सकते हो ।।

उठती सिंधु की लहरें

न कोई रोक सकता है

प्रभ के प्रीत की धारा

न कोई बाँध सकता है ।। जिसे ।।

जगाओ इनसानियत दिल में

प्रभु स्वय आयेंगे मिलने

टूटे भेद का परदा

स्वयं प्रकाश आता है ।।जिसे ।।

जो नारायण से मिलना है

गहले तत्व तू उसका

प्रेम की गहराई में वन्दे

नहीं सुध–बुध रहता है ।। जिसे ।।

जब चाह न हों दिल में

जब चाह न हो दिल में
तब समझो बेला मिलन की।

आजा मोहन दर्शन देजा
नयनों से मेरे नीर बहे

सुध-बुध खोये तन की ॥ तब समझो ॥

मन सूना हो तन सूना हो
त्याग की गहरी नदिया हो

छवि दीखे हरि ही की ॥ तब समझो ॥

जिय नहीं माने हरि बिन ऐसे
स्वामी मिलन बिन गंगा जैसे

चरणो पै जीवन हरी की ॥ तब समझो ॥

टूट जायें तेरे बन्धन सारे
गुरु नारायण एक सहारे

सेवक ये गुरु चरनन की। तब समझो ॥

कभी न धोखा देना किसी को

कभी न धोखा देना किसी को ।
हरघट बैठे हैं भगवान ।।

कंकड़-पत्थर और माटी में
मन मन्दिर और उस मस्जिद मे
व्याप रहे हैं वो हा श्याम
कभी न……।।

धन सत्ता के पीछे न जाना
कभी किसी को मत दुख देना
अंत में कोई न आवे काम
कभी न……।।

जिसको ढूंढ़े तू वन-वन में,
वह बैठा है तेरे मन में
ज्ञान बिना नहीं जाने नाम
कभी न……।।

उमर गयी बिषयों के माही
नारायण गुरु सत्य बताही
जीवन खोओ न बेकाम
कभी न……।।

ओ शक्ती पुन्ज सरोवर

ओ शक्ती पुंज सरोवर
क्यों निज रूप को भूला

अगम ज्योति के तुमही पूरक
नाम रूप निराला
शक्ती तिहारी अब तो जानो
काहे फिरे मतवाला ।। ओ शक्ती ।।

देह नहीं तू आतम् प्यारे
माया में लिपटाया
तत्व ज्ञान से निज को चीन्हो
भटके भोला भाला ।। ओ शक्ती ।।

सपने में ज्यों दुख से रोये
तैसे तू भरमाया
सत्य स्वरूप में आनन्द दीन्हो
देकर अमृत प्याला ।। ओ शक्ती ।।

निर्मल मन से गुरु गुन गाओ
नारायण गुरु अपारा
तू ही साक्षी जगत के बन्दे
बना हुआ बेहाला ।। ओ शक्ती ।।

क्या कहूँ कैसे बखानूँ

क्या कहूँ कैसे बखानूँ
गुरु दया का पार नहीं

जीव को तू ब्रह्म कीन्हा
ब्रह्म से तू निज को दीन्हा
ऐसी अनुपम दया है तेरी
गुरु दया का—

माया का परदा हटा के
सत्य का दर्शन करा के
शरणागतों को करते न वेरी
गुरु दया का—

जन्म मरण की फाँस कटाके
जीव को निज प्रेम देके
दुख से तुम करते निबेरो
गुरु दया का—

नारायण प्रभु तुम धारा के
भक्तों को अमृत पिला के
दर्शन में न होय देरी
गुरु दया का—

भक्तों का जीवन सहारा तू ही

भक्तों का जीवन सहारा तू ही
नय्या का खेवन हारा तू ही
नय्या तू ही, खिवय्या तू ही
लहरों का है मंझधारा तू ही

भक्तों का जीवन……॥

दुखिया तू ही सुखिया तू ही
नयनों की बहती अश्रुधारा तू ही,

भक्तों का जीवन……॥

कुसुमों की ये मुस्कान तू ही
दुखिया हिये को तूफान तू ही

भक्तों का जीवन……॥

निराशा की जब घटायें छायें
वर्षा की बूंद बनकर के आये

भक्तों का जीवन……॥

वो नटवर सहारा बनो।
नारायण नाम किनारा बनो॥

गुरु कर्णधारा, लगावे किनारा

गुरु कर्णधारा, लगावे किनारा
भक्तो की नैय्या को करे भवपारा
शरणागतों का तू ही सहारा
ज्ञान का दीपक हरे दुख भारा
आओ खेवनहारा, लगावो सहारा

भक्तों…….

चरण में तोरे गंगा की धारा
अनुपम अनूप ही सुख सारा
है, अज्ञान हारा; जग रखवारा

भक्तों……

धन-धन ज्ञान अज्ञान नसाया
सत्त धर्मन से अधर्म मिटाया
भ्रम छुटावन हारा, नारायण देह धारा

भक्तों……

सद्गुरू मिले तकदीर बनाया
भक्तों के मन का मैल मिटाया
तू ही ग्रन्थ सारा तेरा पसारा

भक्तों……

असत्य जगत का तत्व बताओ

असत्य जगत का तत्व बताओ
सद्‌गुरु दीन दयाला ॥
अज्ञान निशा का तिमिर मिटायो ।
सद्‌गुरु कर्ण धारा ॥
जन्म जन्म से भटक रहा था ।
अज्ञान को तूहने धारा ॥
चिन्तामणि गुरू ही से सबने ।
आतम् रूप को पाया ॥ असत्य ॥

नाम रूप से गुरू है निराले ।
भेदभाव का नाम नहीं ॥
अमर तत्व से शोभित हरी जी ।
है तत्व ज्ञान अपारा ॥ असत्य ॥

वेद पुरान और शास्त्र की बातें ।
गुरू की अमृत वाणी है ॥
चांद सूर्य तारा की ज्योती ।
उसी शक्ती की पारा ॥ असत्य ॥

शेष महेश और गनेश को पूजो ।
उसी गुरू में जाता है ।
तत्व ज्ञान को उर में लाकर ।
गुरू नारायण नाम अधारा ॥ असत्य ॥

गुरु दया का पार नहीं

गुरु दया का पार नहीं
गुरू दया भव तार दे
नाम रूप अनेक जग में
व्यापक रहता एक सब में
ज्ञान कराये गुरूदेव हृद में

गुरू दया—

जीवन सुखमय होय तेरा
मन की प्रभु में कर ले बसेरा
ब्रह्म दीप कर देगा उजेरा

गुरु दया—

पापी से पापी होय कोई
गुरु दया से तारन होई
मंत्र जपे मुक्ती हो सोई

गुरु दया—

गुरु चरणों में प्रीत लगाओ
नारायण प्रभु से दया को पाओ
जन्म जन्म की बेड़ी कटाओ

गुरु दया—

रे हरी ! कैसे तोहें भुलाय

रे हरी ! कैसे तोहे भुलाय

रे हरी—

छिन छिन पल पल मग को जोहूँ

हरी से हिय लगाय……।। रे हरी ।।

प्रीति की रीति, अति ही चोखी

सांच को सांचा बताय…।। रे हरी ।।

कहकर मथुरा, द्वारका राजे

गोपिन प्रीति बढ़ाय ।। रे हरी ।।

योग वियोग, सब कुछ सहते

ज्ञान से तत्व बुझाय ।। रे हरी ।।

तुम क्या जानो, मन की बतियाँ

भक्त कैसे विताय ।। रे हरी ।।

दृढ़ निश्चय और ज्ञान से मन का

नारायण रूप समाय ।। रे हरी ।।

जीवन के दिन बीते जाते हैं

जीवन के दिन बीते जाते हैं
चार दिनों को माया है ये

गुरू का नाम जपे सुख पाये
छिन छिन जीवन नसता जाये
नाना वेष धरे यम आये हैं ।। जीवन ।।

ऋद्धि सिद्धी सब झूठो माया
प्रभु की सुन्दर है प्रतिछाया
काहे झूठे मंगल गवाया ।। जीवन ।।

वेद शास्त्र सब गुरू बखाने
तू अपने से निज को जाने
योंहि तेरा जन्म सिराजे ।। जीवन ।।

नाम रूप विविध कहानी
सत्य एक और माया भुलानी
नारायण गुरू कह बानी ।। जीवन ।।

हे नाथ दयावानों के

हे नाथ दयावानों के दयावान तुम्हीं हो
डूवती नैया के पतवार तुम्हीं हो

दर को छोड़ तेरे कौन दर को जाऊँ
कौन अपना दूजा अपना किसे बनाऊँ
इक नाथ भरोसा तेरा दयावान तुम्हीं हो

डूवती नय्या......॥

दिल में तेरी है प्रीति किससे ये सुनाऊँ
सत का रहेगा सत हो लाख दिल बुझाऊँ
इक आस तेरी प्यारे भगवान तुम्हीं हो

डूवती नय्या......॥

हँस रहा है कोई तकदीर देख किसी की
सत्संग की कमी है अहं के समझ की
दिन न रहे समाना तकदोर तुम्हीं हो

डूवती नय्या......॥

ज्ञान नौका सुन्दर गुरू ने दिया है मेरे
अद्भुत अनोखी वूटी भाग्य से पायो मेरे
भक्तों के नाथ नारायण गुरू तू ही तुम्हीं हो

डूवती नय्या......॥

हे प्रभु शरण तिहारी आई

हे प्रभु ! शरण तिहारी आई

अनाथों के नाथ तुम्हीं दया सागर

दीनबन्धू तू ही करुणाकर

हे प्रभु शरण……॥

जब जब टेरा भक्तों ने तुमको

मान छोड़ तुम आये निज को

हे प्रभु शरण……॥

द्वारे तिहारे आकर गुरूवर

लाज न जाय अब हे नटवर

हे प्रभु शरण……॥

हृदय पर क्या बीती हुई है

तुमसे कुछ नहीं छिपी हुई है

हे प्रभु शरण……॥

नारायण की दासी कहाऊं

सत्य विवेक हिय में जगाऊं

हे प्रभु शरण……।

तेरे दुःख से भी है प्यार

तेरे दुख से भी है प्यार
तेरे सुख से भी है प्यार
तेरा ही है ये संसार

दुनिया के मालिक राम।
जगती का तू है भगवान ॥

जो तू चाहे सो कर लेता
क्षण में मिटाता क्षण में बनाता
जग का तू करतार

दुनिया के मालिक राम।
जगती का तू है भगवान ॥

निज जन को तू हिय लगाता
मन में उनके वास पाता
घर-घर का है रखवार

दुनिया के मालिक राम
जगती का तू है भगवान

साधना की पराकाष्ठा की सिद्धि के फलस्वरूप निष्ठा की प्राप्ती होती है। निष्ठा एक महान सत्य है। इसी कारण किसी-किसी को ही परम निष्ठा की प्राप्ति होती है।

विषयों को भी ज्वाला में तू
अमृत के भी प्याला में तू
व्याप रहा कर्णधार

दुनिया के मालिक राम
जगतो का तू है भगवान

विश्व चराचर नदो नालों में
छिपा हुआ तू जड़ चेतन में
कर नारायण उद्धार ॥ दुनिया ......॥

"सत्य प्रेम के द्वारा ही तुम दूसरों को जीत सकते हो। प्रेम छिपाये नहीं छिप सकता। खाँसी, खुर्क, इश्क, मुश्क स्वतः ही प्रगट हो जाते हैं।"

"हमारा हृदय ही दर्पन है हम अपनी भावना से ही दूसरे के हृदय की नाप करते हैं अतः पहले अपने को विशुद्ध बनाओ तब दूसरों की परख करना।"

समस्त शास्त्रों में पारंगत होने पर भी बिना भगवान सतगुरू सत्संग के, ईश्वर की प्राप्ति असम्भव है।

जरा तू देखले मुखड़ा

जरा तू देख ले मुखड़ा ।

तोरा है रूप क्या प्यारे

वृथा फूला तू माया में ।

नहीं माया का तू पुतला ॥

जिधर देखो उधर तू हो

जरा तू देख..............

दो नयना रूप है सुन्दर

जरा गुण जान ले अपना

धारा सुख अखण्ड तू हो

जरा तू देख..............

तू निज रूप को भूला

इस झनकार माया में

जगत हस्ती तू ही तू ही

जरा तू देख........

नारायण गुरू मेरा

मुझे चरणों में रख लेना

जहाँ देखो गुरू गुरू

जरा तू देख........

शास्त्र हमें ईश्वर का दर्शन नहीं करा सकता है, हाँ यह अवश्य वता सकता है कि जिसके द्वारा ईश्वर की प्राप्ति होगी ।

इक प्यार भरा हृदय मेरा

इक प्यार भरा हृदय मेरा ।
क्या कोई इसको जानेगा ॥
क्षण भंगुर ये जीवन कलिका ।
विरला इसको पहिचानेगा ॥
प्रभु प्रेम में तू रत रहकर ।
जीवन को अर्पण कर देना ॥
इक दर्द भरी टेर को सुनकर ।
दौड़ के हरि आ जायेगा ॥ इक ॥
अटक-भटक जब विपदा आये ।
गुरु चरणों को भज लेना ॥
नाम गुरु का अमृत बनकर ।
अमर तत्व बतलायेगा ॥ इक ॥
प्रभु प्रेम के ओ दिवानों
इक छिन मन में तुम सोचो सही ॥
ज्ञान बिना क्या प्रभु को पाये ।
योंहि समय खो जायेगा ॥ इक ॥
सार तत्व जीवन का भाई ।
कर्तव्य सत्य पर डट जाना ॥
तत्व ज्ञान गुरु का जानो ।
नारायण निर्मल कर देगा ॥ इक ॥

भाग्य जागे मने सद्गुरु पायो

भाग्य जगे मैंने सद्गुरु पायो
मन के दीपक जल गयो रे।
गूंज उठी मन में मेरे वानी
ज्योति रूप धर प्रभु आया रे॥ भाग्य॥
अचल हिमालय सा मन हो गया
दर्शन में ही सुख पाया रे
कोटि भक्ति करे कोई गुरु की
दया बिन सब फीका रे॥ भाग्य॥
जन्म-जन्म के अवगुण भागे
मन में राम समाये रे॥ भाग्य॥
जीते हैं हम प्रभु के सुख में
ज्ञान सुधा की धारा रे॥ भाग्य॥
हृदय चढ़ा चरणों पर हमरा
जैसे चाहो बना लेओ रे॥ भाग्य॥
जन्म-जन्म की वासना नस गई
राम रूप सुख पाया रे॥ भाग्य॥
रामकृष्ण सा पाया गुरुवर
नारायण गुरु बन आया रे॥ भाग्य॥

अपने कर्म पर सदैव चौकीदारी करते रहना चाहिए। असत्य, अमर्यादित, दूसरों को सताने वाले निन्दित कर्म को त्याग देना चाहिए।

आत्मा सत्य है, वह सत्य को ग्रहण करती है असत्य से दूर भागती है।

गुरुदेव दया कर दो

गुरुदेव दया कर दो क्या देखते हो हमको

हम तो तुम्हारे दर पर खूब देख लो दिल को
हर छिन तुम्हारी राह को दखते हैं हम प्रभो
देते नहीं हो तुम दिखाई राज इसमें कुछ विभो
गुरुदेव......॥

इन्सानियत की वू नहीं है भक्ती का केवल कलेवर
शुद्ध अन्तः कर लो, मिलेंगे वह प्रेमवर
गुरुदेव......॥

निजकर्म में निष्कर्म हो, जप लो गुरु नाम को
निष्ठा एक प्रेम हो, पाओ भगवान को।
गुरुदेव......॥

जान गये हम प्रभो सुधर तुम्हारी मान के
नाम नारायण गुरु रख लो भक्ती की आन को।
गुरुदेव......॥

भक्ती वही भक्ती है जो अपनी आराध्य की ओर जो निष्ठा श्रद्धा प्रेम है उसका (Publicity) करने की सूक्ष्म भावना भी न रखे। अपनी प्रसिद्धि की कामना भी मानव को पथच्युत कर देती है।

जयति जय गुरुदेव केशव

जयति जय गुरुदेव केशव
वन्दना स्वीकार हो।

तू कृपालु भक्त पालक सुगति शान्ति धाम है
नेति-नेति वेद गाते तेरी महिमा गान है
जयति जय......।।

भव भार हारन को गुरु अवतार धारा है तूही
निज प्रेमी बालक जानकर अब तो दया कर दे सही
जयति जय......।।

विमल पावन गुण तुम्हारा, जगत ज्योतित कर रहा
ज्ञान भक्ती दो हमें दास वन्दन कर रहा
जयति जय......।।

ज्ञान भक्ति से सुशोभित, नारायण गुण गा रहे
शीश मेरा चरण तेरा, विश्राम अनुपम पा रहे ।।
जयति जय......।।

भगवान सतगुरु के ज्ञान का अनुसरण करना कठिन नहीं है क्योंकि वह सीधे-सीधे सरल एवं सत्य ज्ञान का अनुमोदन कराते हैं जब तक करते नहीं तब तक कठिन प्रतीत होता है कर लेने पर कठिन होते हुए भी एक नवीन स्फुरित, शक्ति एवं आनन्द का अनुभव होता है जिसके द्वारा साधक साध्य को प्राप्त ही कर लेता है ।

शक्ति तू ही शक्ति मान तू ही

शक्ती तू ही शक्तीमान तू ही,
तुझे छोड़ के जाऊँ न नाथ कहीं

तुझसा दयालु कौन है दीनों के वास्ते
निज को लुटा देता है भक्तों के वास्ते
जो सच्चे दिल से टेर लगाये पाते हर कहीं
शक्ती तू ही......॥

प्रेम सिन्धों हे गुरु रहते हो हर कहीं
योग भोग जोग में रम रहे तू ही
देख रहे लीला तेरी शान्त हम यहीं
शक्ती तू ही......॥

जब से लिया सहारा सौंप के निज को
प्राण प्रण से हम पुकारे नाथ तुमको
पुरुषार्थ में कभी जो न साथ दे रहो
शक्ती तू ही......॥

परवाह नहीं है तन भी जो तेरे लिये कटे
एक दिन जाना है सत्य पर डटे
नारायण नाम हो दिल में गुरु हर कहीं
शक्ती तू ही......॥

तत्व ज्ञान के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति होती है ।

माता पिता गुरू तुम ही हो

माता पिता गुरु तुम ही हो
　　और न मन में कोई मेरे
रघुवंश शिरोमणि राम हो तुम
क्रीड़ा करते मोहन बने तुम
नंद के आंगन खेलते हो
　　　　　　माता पिता…॥

दुर्गा स्वरूप धर असुरों को मारा
राधा रूप से प्रेम संवारा
सीता रूप से धर्म सुधारा
　　　　　　माता पिता…॥

नाथ नहीं मुझे कुछ भी चिन्ता
मन मन्दिर में तू ही रहता
विश्व तुम्हारा चराचर
　　　　　　माता पिता…॥

चन्द्र सूर्य यह तेरी छाया
कैसे दमके तेरी माया
नारायण जगत करण हो आया
　　　　　　माता पिता…॥

हमारा भाव ही हमको फल देता है। मानो तो देवता न मानो तो पत्थर। पत्थर में ईश्वर की भावना करते हैं तो ईश्वर का फल प्राप्त होता है फिर चेतन आत्मा को ईश्वर मानने से क्यों नहीं प्राप्त होगा।

गुरु बिन बनें न एकौ काम

गुरु बिन बनें न एकौ काम ।
कोटि उपाय करो तुम भाई
अंत में होय बेकाम ।। गुरु बिन ।।

वालि नें गुरु को त्याग दिया था
बिगड़ा सारा काम ।। गुरु बिन ।।

राम कृष्ण ने गुरु को माना
हो गये ब्रह्म समान ।। गुरु बिन ।।

इन्द्र ने किया अपमान गुरु का
राज्य छिना हुए बेकाम ।। गुरु बिन ।।

अब तो चेतो तुम मेरे भाई
सद्गुरु को पहिचान ।। गुरु बिन ।।

नारायण गुरु चरण दोहाई
तुझको मेरा प्रणाम ।। गुरु बिन ।।

पत्थर में ईश्वर की कल्पना इसीलिए करते हैं कि उसकी पूजा करना एवं भावना लगाना सरल है। हम अपने मन से जो कुछ भी करेंगे एवं कहेंगे उसमें बाधा नहीं पहुंचाता किन्तु चैतन्य देव में ऐसा नहीं हो सकता। वह अपने मन के अनकूल चलायेगा। हमारे इच्छानुकूल नहीं। दूसरे की इच्छा पर चलना अति दुस्तर है। अतः विरला ही कोई चैतन्य मूर्ति की उपासना करता है।

दयालु तुम दया कर दयो

दयालु तुम दया कर दयों,
भक्तों को सहारा दे दो ।

तुम विन नाथ नहीं कोई
कौन दास की सुन ले
अव तो गुरु हो तुम स्वामी
वेड़ा पार कर देग्रो ।।दयालु ।।

जगत का एक तुही है मालिक
एक क्षत्र को धारा
निवेदन भक्तों का श्री गुरुदेव
द्वारे पै ही सुन ले ग्रो ।। दयालु ।।

तुमसा मालिक पाकर के
चातक स्वाती का प्यासा
नभ का चन्द्रिका न वन के
शरणागत के हो जाग्रो ।। दयालु ।।

ग्रर्जी आज है गुरुदेव
मर्जी पै मत छोड़ो
ग्रवलम्ब एक नारायण
गुरूजी भक्तों के हो ग्रो ।। दयालु ।।

भगवान सतगुरु को मनुष्य नहीं मानना चाहिये ।
संसार से कुछ न चाहो यह भी निष्कामना है । यदि मांगना है तो प्रभु से मांगो यदि कहना है तो प्रभु से कहो ।

लाज राखो न राखो तुम्हीं जानो

लाज राखो न राखों तुम्हीं जानो
लाखो भक्तो को तुमने तारा
पतित उधारन नाम को धारा
पार करो न करो तुम्हीं जानों ॥लाज॥

पुन्य कछु नहीं मैने कीन्हा
गुरुवर दया को कैसे कीन्हा
लाज बचे न बचे तुम्हीं जानों ॥लाज॥

वरद हस्त जिस पर है गुरु का
क्या कोई कर सकता इस जन का
दया को करो न करो तुम्हीं जानों ॥लाज॥

जब-जब मिलता भक्तों को त्रासा
अवतार धार दुख तुमसे नासा
शरण में पड़ी हूं तुम्हारे तुम्हीं जानों ॥लाज॥

जगत हेतु नारायण आया
भक्तों का, सब ताप मिटाया
यह पत है तुम्हार तुम्हीं जानों ॥लाज॥

बेर भई क्यों, बेर भई क्यों

बेर भई क्यों, बेर भई क्यों

पूरण कर गुरुदेव

जल को थल कर सकते स्वामी
थल में नभ ला सकते स्वामी
अब तो पूरन शीव बनाओ ॥ बेर ॥

दुर्गम कुछ नहीं तुम्हरे खातिर
विनय करत है भक्त सादर
आकर निज का रूप बनाओ ॥ बेर ॥

चाह नहीं कुछ हिय में मेरे
स्वीकार करो या नहीं जीवन तेरे
कर्त्तव्य राह दिखाओ ॥ बेर ॥

पूजन अर्चन नाथ नहीं है
ज्ञान भक्ती भी साथ नहीं है
महाप्रभु दया कर जाओ ॥ बेर ॥

निष्ठा की परिपक्वता होनी चाहिए। फल हमारे हाथ में है।

दीनों के दिल में दिलवर रहते

दीनों के दिल में दिलवर रहते
गुरु अति ही करुणाकर
अदीनों के दिल में यदि न वसते
जगत में होती कैसे गुजर
दीनों......

जब-जब होती धर्म की हानि
आते हो गुरू नर रूप धर
दीनों......

अद्वैत-का तुम प्रभु पाठ पढ़ाते
सद्गुरू बने हैं धर्मावर
दीनों......

अज्ञान अंधेरी जगत में छाई
ज्योति जगाओ तुम गुरुवर
दीनों......

महाप्रभु जग कल्याण करत हैं
जल्दी करो हे हलधर
दीनो......

प्रेम में कामना दुःख स्वरूप है एवं निष्कामना सुख स्वरूप प्रेमी प्रियतम से कुछ नहीं चाहता वह केवल देता है। यदि कुछ भी लेना चाहेगा तो दुख की पराकाष्ठा हो जायेगी। प्रियतम से प्यार भी न चाहो।

यह भाव भरा दिल है मेरा

यह भाव भरा दिल है मेरा
जरा श्रद्धा चरणों पर चढ़ने दे

जीवन अर्पन करके प्रभु जरा चरण धूलि को छूने दे

एक लालसा उर के माहि
सो तुम्ह जानत नाहि छिपाहि

ज्ञान रूप नैनों से छवि देखूं निष्ठा को पूरी कर लेने दे

यह भाव........॥

दान शिरोमणि कृपा निधि स्वामी
अहेय नहीं कुछ अन्तर्यामी
हर्ष विषाद सब एक हो होय
उर में अपने को रहने दे

सुन्दर छवि तेरी ज्ञान की शोभा
चरण कमल पै मन अति लोभा
भक्ति भाव को हिय में धर कर
जीवन तुझ पर चढ़ने दे
यह भाव.......॥

परम धीर प्रभु हिय में धर के
तव चरणों को अपना कर के
एक विन्दु कहीं गिर न जाये
बांह पकड़ के उठा तू दे
यह भाव ....॥
वाणी सुध गुरु की अति पावन
दृग नैन खुले पाप नसावन
सेवन सुलभ सकल सुखदायक
नारायण चरणों में रहने दे
यह भाव........॥

"हमारे अन्दर स्वयं विकार है तब दूसरों को क्या देखें। हम सम्भल जायेंगे तो दूसरा स्वतः ही हमारे सन्मुख सम्हल कर आयेगा।"

"पारस लोहे को भी सोना बना देता है फिर तुम तो ब्रह्म हो यदि ब्रह्म शक्ति स्वभाव गुण को प्रकट कर लो उसमें तुम ढल जाओ तो स्वतः ही तुम्हारे समीप आने वाले तुम्हारी तरह तुम्हारे सत्संग से बनने लगेंगे।"

भगवान सतगुरु का ज्ञान अनुभवी ज्ञान है वह जो कहेंगे करवायेंगे स्वयं भी करेंगे इसीलिए हे मन तू उन्हीं की वाणी का अनुगमन कर।

कर्मठ ही सबको प्रभावित कर सकता है। जो स्वयं कर्मशील नहीं है वह दूसरे से क्या करायेगा।

गुरू चरण मिले माया सारी कट गई

गुरु चरण मिले माया सारी कट गई
जन्म-जन्म की उलझी ग्रन्थियाँ
सुलझ पलों में जायेगी
ध्येय एक जीवन का मन में
गुरु ही मन में रम गया है।
सुधा सिक्त चरण रज लेकर
चित्त तुझमें लय हो गया है।
सरस सुजान अनोखी शक्ती
दुख सुख सम मेरा हो गया है।। गुरु चरण ।।
जीवन पथ के कटु सब ठोकर
मधुर मनोहर बन गया है।। गुरु चरण ।।
शुद्ध हृदय निर्मल गुण गाये
नारायण गुरु मिल गया है।। गुरु चरण ।।

जहाँ भक्ती हैं वहाँ द्वेष नहीं है। सच्चा भक्त निज प्रभुमय देखे जगत, का सन करे विरोध।

भक्ती एवं ज्ञान की सामंजस्य है भक्ती विहीन ज्ञान, ज्ञान विहीन भक्ती, अधूरी रह जाती है। है दोनों ही एक, ज्ञान जनाता है भक्ती प्रेम करती है।

आज अर्जी जा रही गुरु तोरे द्वार

आज अर्जी जा रही गुरु तोरे द्वारे
भक्तों की टेर लगी सुन लो मेरे प्यारे

श्रद्धा से जो जपता था
मन में बिठाकर
तू भी नित्य रहता था
द्वारे वाके जाकर
आज कैसे बेर हुई प्रभु तेरे द्वारे। भक्तों ॥

रसना जिसकी रसमय
गान तेरा गाकर
रसिक शिरोमणि रसमय होता
हृदय में बिठाकर
आज कैसा गजब हुआ गुरु तेरे द्वारे ॥भक्तों ॥

अधमों ने तुझे पुकारा
दिल में आह भर कर
दासों की टेर सुन कर
प्रभु आये दौड़ कर
आज नियम बदले देखा हरी तोरे द्वारे ॥ भक्तों ॥

अपराधो माना मैंने निज को
तुझको न रिझाकर
नारायण गुरु देर क्यों है
देखो प्रभु आनकर
आज बेरी होते देखा प्रभो तोरे द्वारे ।। भक्तों ।।

"सत्य तुम्हारे जीवन का ध्येय है। सत्य पर यदि रहोगे तो तुम्हारा वाल भी वांका नहीं हो सकता।"

"सत्य एक दिन सत्य होकर रहेगा। चापलूसी यार वहुत मिल जायेंगे किन्तु सत्य हितैषी विरला हो कोई अपना होता है।"

"तुम किसी से द्वेष मत करो केवल प्यार करते जाओ एक तुम्हारा द्वेषी भी तुम्हारा हृदय से मित्र वन जावेगा भले ही व्यवहार में मित्रता न दिखाये किन्तु तुम्हारे प्रेम पर उसका हृदय झुक जावेगा।"

भगवान सतगुरु के समीप जो जिस भावना से आता है उसकी वह पूर्ण करते हैं।

भगवान सतगुरु कल्पतरु हैं, हे मन उन्हीं के चरणाम्बुज में पड़ा रह वही शरणागतपाल तेरी अवश्य रक्षा करेंगे।

आया जो दर पर गुरू तुम्हारे

आया जो दर पर गुरु तुम्हारे।
नय्या लगाते क्षण में किनारे।
जीवन का दुखड़ा पल में मिटाते।
पापों का बेड़ी क्षण में कटाते।
उद्धार जग के करन वारे।
नय्या लगाते क्षण में...
कैसी अनोखी दया तुम्हारी।
शरण में आते कृपारी।
कुछ न कठिन है हरी हो हमारे।
नय्या लगाते क्षण...
गणिका अजामिल कौन तपस्वी।
गीध जटायु कौन मनस्वी।
बने तुम्हीं थे मोक्ष के द्वारे।
नय्या लगाते क्षण...
भला बना है जीवन हमारा।
नारायण गुरु सच्चा सहारा।
भय नहीं चाहे तारे न तारे।
नय्या लगाते क्षण...

भगवान सतगुरु जिसको जैसा चाहे बना लेते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार रूपी व्याधियों से मुक्त कर देते हैं।

धर्मज्ञ बनो। धर्म के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

तकदीर तेरी तेरे हाथों में

तकदीर तेरी तेरे हाथों में
मूरख सोचत है दूजन का
शुभ कर्म करो दिन रैन सभी
आसक्त न हो मन में कभी
ज्ञान रखो मन में हर छिन
तकदीर तेरी.........

पुरुषार्थ रूप तुम बन कर के
जगती में सुख भर कर के
हृदय न करना कभी भी खिन्न
तकदीर तेरी......

तत्वज्ञान का अर्जन करना
शान्ति हृदय की कभी न खोना
आत्म ध्यान करना निश दिन
तकदीर तेरी......

गुरु नारायण सेवा करना
कभी न आज्ञा खाली करना
हो नहीं तुम उनसे भिन्न
तकदीर तेरी....—

भगवान सतगुरु को स्थान-स्थान पर इसी वैद्य की उपमा दी गई है क्योंकि वह शारीरिक तथा मानसिक दोनों क्लेषों को दूर कर देता है।

तेरी शरण में जो गया

तेरी शरण में जो गया
काहे दूजन को दुख देवे
चार दिनों का जीवन तेरा ॥
खिला सुमन जो आज वन में
कल अवश्य मुरझायेगा
बाग का माली उसको राखे
पर वह नहीं रख पायेगा—
चार दिनों........

प्रेम से मिल कर जीव यापे
रोम रोम में गुरु ही व्यापे
कोई ठिकाना कछु नहीं तेरा
कल को फिर कहाँ जायेगा
चार दिनों......

जैसा करो तुम वैसा पाओ
कभी न किसी का हृदय दुखाओ

आह किसी को खाली न जाये
बनकर पाप सतायेगा
चार दिनों......

सच्ची प्रीती आत्मा से करो
नारायण में लय रहा करो
पार इसी से बेड़ा होये
कभी न अपनी आत्मा खोये
चार दिनों......

नित्य प्रार्थना करो--

"रे मन: तू शुद्ध वृद्ध निर्मल क्यों नहीं बनेगा तुझे खराब सब कहते हैं तो तू अपनी खराबी स्वीकार कर ले तू खराब है। अच्छा होने का प्रयास कर। अच्छा हो जायेगा।"

विचार कर बोलना चाहिये। अविवेक के कारण सब कुछ किया कराया गुड़ गोबर एक हो जाता है।

विवेकवान हो संसार पर विजय प्राप्त कर सकता है।

साधक के लिए विषय वासना का त्याग संयम है।

सतगुरु का सत्संग, वचन पर विश्वास हो जाय परन्तु यदि विषय का त्याग नहीं होता तो पथच्युत होने की सम्भावना रहती है।

मानव जीवन प्राप्त करके जितना भी समय हरि चर्चा सत्संग में लग गया वही सार्थक है।

जहाँ गुरु विराजते

जहाँ गुरु विराजतें ।

वही मेरा धाम है ॥

तीर्थों का ये ही सार है ।

मन में मेरे ही राम हैं ॥

दुनिया में जाऊँ मैं कहाँ ।

तेरे सिवा क्या काम है ॥

तेरो शरण में आ गये ।

तरने का क्या नाम है ॥

पुन्य उदय हुये मेरे ।

प्रभु मेरे वाम हैं ॥

भोग त्याग सब गया ।

नारायण गुरु जान है ॥

जिन पै सद्गुरु प्रेम की मदिरा चढ़ी

जिन पै सद्गुरु प्रेम को मदिरा चढ़ो!
दुनिया में नहीं कुछ शेष रहा
मन वाणी को गम्य कथा
हालत का कैसे बखान करें ॥ जिन......॥

सकल्प विकल्प हो छीन भये
तन इन्द्री भी मौन गहे
गुरू ही में सब खो गये ॥ जिन......॥

पाप पुन्य सब भाग गये
सुख संपत्ती की क्या बात कहे
धर्म अधर्म हिय हो गये ॥ जिन......॥

ब्रह्म एक ने जगत रचाया
जगत में दूजी नहीं कोई माया
नारायण गुरु एक दिखाया ॥ जिन......॥

जिसे कोई सहारा नहीं जग में

जिसे कोई सहारा नहीं जग में
उसे नाम का तेरा सहारा मिले

जब चारों तरफ की आस टूटे
चित्र लिखित सी रेखा छूटे
तब नाम ही तेरा जहाज बने
मन में कुछ तो शान्ति मिले ।।जिसे……।।

दुख से मन जब बोझिल होवे
घोर निराशा हिय मंडरावे
चैन न छिन को हिय में परे
तब नाम तेरा अवलम्ब मिले ।। जिसे……।।

प्रभु जब भक्तों से दूर बैठे
हिय में मिलने की पीड़ा उठे
विरहा दिल को दग्ध करे
नाम से जीवन दान मिले ।।जिसे………।।

भक्त तेरा पुकार करे
शरणागत को तू प्यार करे
दर्शन दे दे आज अरे
महाप्रभु दृष्टि हिय की करे।। जिसे……।।

मै कैसे रिझाऊँ तुमको हरी

मैं कैसे रिझाऊं तुमको हरी
मेरे कर्म के वन्धन विघ्न करे

कुछ चाह नहीं दिल में मेरे
अरमा नहीं मन में मेरे
इक दृष्टि जरा तुम डालो प्रभु
नयनों में तू ही वास करे ॥ मैं...........॥

मधुर सो मूरत हिय में रखे
याद को तेरी कैसे सहे
वह दिन कैसे आये हरि
निज की वीती तुमसे करे ॥ मैं.......॥

कर्म कुटिल जो हमने किया
मिलन का व्यवधान हुआ
तुम ही कहो वह कैसे छुटे
फिर न जुदा हम होया करे । मैं.........॥

निर्मल भक्तों के प्यारे प्रभु
जीवन अवलम्ब हमारे विभु
अब तो दया कर मोरे हरे
नारायण नाम उचारा करे ॥ मैं..........॥

यह है प्रभु का दरबार सखी

यह है प्रभु का दरबार सखी
अन्याय न होगा यहाँ कभी

दुख पड़े जब न घबराओ
क्षण सुख में मे भूल पाओ
धीर धरो प्रभु को पाओ ।। अन्याय ।।

चलती फिरती दुनिया है ये
चार दिनों की मजलिस है ये
शेष बचेगा न कुछ भी ये ।। अन्याय ।।

आज धनी जो रंक हुआ कल
मन में फूला क्यों तू पल पल
धोले हृदय का तू कलिमल ।। अन्याय ।।

बरताव तेरा हो सब सुखग्राही
मनमें मैल न जरा भी आहि
नारायण इक दिन आ जा हो ।। अन्याय ।।

दयानाथ तू सबकी सुन लीजै

दयानाथ तू सबकी सुन लीजै !

आस तिहारो सांस तिहारो

भक्तों की प्रभु अब रख लीजे

दयानाथ………

निर्मल परम प्रेम की ज्योति

मधुमय नाम गान कर

दयानाथ………

विनय नित्य हम करते तेरा

अमर दया की वर्षा कीजे

दयानाथ………

दीनबन्धु है नाम तिहारा

टेर प्रभु अब तो सुन लीजे

दयानाथ………

नारायण ज्योति मन के माहि

पल पल में याद करीजे

दयानाथ………

चलो चलो गुरु की नगरिया रे

चलो चलो गुरू की नगरिया रे
सुन्दर साज सजाये

सहज में दर्शन प्रभु का होता
जगत जाल का परशन होता
प्रभु दर्शन मन भाये रे ॥ चलो ॥

पावन पुरी यह प्रभु की प्यारी
द्वार का जैसो शोभान्यारी
ब्रह्मानन्द सुहाये रे ॥ चलो ॥

सूर्य अखंड की दीपक होती
निज आतम की जगती ज्योति
नारायण गुन गाये रे ॥ चलो ॥

भर ले भर ले भर ले

भर ले, भर ले, भर ले
गुरू दया से झोलो
विकराल कठिन भव सागर माहिं
गुरु दया ही पार लगाहिं
भर ले भर ले……

सुख दुख से क्यों डरता प्रानी
सत्य से सब ही पाप नसाना
भर ले भर ले……

समझ बूझ कर सब कुछ सह ले
रोम रोम में इन्सानी धर ले
भर ले भर ले………

कर्त्तव्य रहित क्या मानव टिकता
वेद पुराण सब ये कहता
भर ले भर ले……—

आज जो कांटा बना है राही
पुष्प बनेंगे कल के माहिं
भर ले भर ले………

अपना कर तू गुरु नारायण
गुरू दया तू कर धरायण
भर ले भर ले………

ज्योति में ज्योति मिला जा

ज्योति में ज्योति मिला जा
तुझ बिन कैसो बीते
अष्ट प्रहर प्रभु मैं मग जोहूँ
दर्शन तेरे से तृप्त होहूं
पल पल कैसे
तुझ.........

विरह व्यथा की गहरी नदिया
सूख गया दृग बहे न पनियाँ
निज दरश करा देते
तुझ.........

दिया तिहारी अति ही अद्भुद
सांय के खोती हूँ मैं सुध-बुध
जीवन धन आ जाते
तुझ.........

चन्द्र चकोर की गति है मेरो
प्रभु मिलन का क्या सुख कहुँ री
नारायण दर्श कराते
तुझ.........

दास की विनती सुन लीजे

दास की विनती सुन लीजे
अब तो दया कर दीजे
जन्म जंन्म से नाम तिहारो
शरण पड़े की विरद समारो
अवलम्ब तिहारो लीजे
दास......

कौन जगत में तेरे सिवा हरि
भक्त वत्सल प्रभु दुख दूर करि
वरद आपनी दीजे
दास.........

पाप कौन से पल पल आते
आत्म रूप में विघ्न कराते
शुद्ध हृदय तू कीजे
दास.......

राधेश्वर तू श्याम पियारो
नारायण तुम मेरो सहारो
नाथ टेक तो लीजे
दास........

लाज जाय नाथ तिहारो

लाज जाय नाथ तिहारो
विरद आपकी प्यारो

जन्म जन्म में अटक भटक कर
जीव शरण में आयो
अब तो दास तिहारो ।। विरद ।।

पाप गठरिया सिर पर रखकर
कैसे तुम तक आयो
अब तो टेक तिहारो ।। विरद ।।

नहीं शक्ती है नहीं भक्ती है
फिर भी द्वारे आयो
अब तो हाथ तिहारो ।। विरद ।।

क्या कहूँ मैं कैसे स्वामी
सेवक तुझ आधीन
नारायण गुरु नाथ हमारो ।। विरद ।।

जरा तू देख दर्पन में

जरा तू देख दर्पन में,
प्रति रूप हैं सारे।

जहां देखो तुही तु ही
जहाँ खोजो तुही तूही
जगत का सारो सत्ता में
प्रति रूप हैं सारे।

जल में जो लहर उठता
अग्निकाष्ठ में रहता
चहुदिन इस चराचर में
प्रति रूप हैं सारे।

मोती सीप में ज्यों है
जगत में ब्रह्म यों हैं
देखो प्रभु के प्यारों में
प्रति रूप हैं सारे।

प्रभु के तत्व को समझो
नहीं माया में तुम उलझो
नारायण इसी जग में
प्रति रूप हैं सारे.........

प्रीति की रीति बड़ी अलबेली

प्रीति की रीति बड़ी अलबेली

विरला इसको जानेगा

कैसे कहूँ वाकी मधु मूरत

डगर डगर में काहे ढूंढ़त

प्रेमी इसको पायेगा—

विरला..................

तीन गुणों से वह रहे निराला

अनुपम रूप बना वेहाला

वह ही उसको जानेगा

विरला.........

मधुमय नाम रसों से भूषित

दुष्ट जनों को करता शोषित

दीन ही इसको पायेगा

विरला........

नारायण गुरु मेरी ज्योति

वैराग्य हिय में अति हो होती

प्रेम सरोवर होयेगा—

विरला......

वह दृग दो हरी

वह दृग दो हरी,
देखे जग में हरी
सदा सेवा करे
तुझे पाया करे
प्रेम भक्ति से पूरित हो
श्रद्धा शील से सीमित हो
मम दृष्टि में तू ही तू हो
सदा सेवा करे……

सर्व पूजित अन्तर्यामी प्रभा
सच्चिदानन्द सर्वज्ञ विभा
जगती से तुम जड़ता हरा
सदा सेवा करे……

नव मुख की मैं बात करूँ
प्यार तुझे ही एक करूँ
पुलक उठे मेरा जान गुरु
सदा सेवा करू……

रहूं निहारत एक तुझे
वह शक्ती दो देव मुझे
वृत्ती न तुझसे नेक हटे
सदा सेवा करे……

वरद हस्त नारायण-का
उद्धार करे सब घातो का
ईश हुआ तू भक्तों का
सदा सेवा करे……

यदि विश्व ही ब्रह्म है तो ब्रह्म से क्यों दूर भागना चाहता है। दुःख भी ब्रह्म सुख भी ब्रह्म। फिर एक प्यारा क्यों एक अप्यारा क्यों ?

ऐसा सोचो—

तेरे में बहुत कमी है। तू व्यर्थ में मिथ्या अहंकार बना बैठा है। तू जैसा भी कोई गुरु सेवी निकम्मा होगा अपने को कर्मनिष्ठ बनाओ।

मैं तेरी दया के कण को लेकर

मैं तेरी दया के कण को लेकर
तुझको अपना कर पाऊँ
प्रभु जी……

तेरी महिमा गूँज रही है
भक्तों के हृदय में
प्रभु जी भक्तों के हृदय में
तन मन धन जीवन को तजकर
तुझमें ही मिल जाऊँ
गुरुवर तुझको……
अजर अमर तू युग युग में आते
प्रभु जी युग……
मगर तेज पुंज में मिलकर
तेरे नाम को गाऊँ
गुरुवर तुझको……

शक्ती नहीं है वन्दन करूं तुम्हारी
प्रभु जी वन्दन तुम्हारी
मधुर मूर्ति को मन में बिठाकर
नारायण शीश नवाऊँ
गुरुवर तुझको……

चरणों में स्वीकृत हो

चरणों में स्वीकृत हो
गुरुदेव प्रणाम हमारा

राजवृथा गजराज वृथा
वृथा गुण सर्व वृथा
ज्यों जीव वृथा इक प्राण बिना
नाथ विना यह जीवन वृथा ।।
गुरुदेव……

है जग में अब कौन हमारा
नाथ विना अब कौन सहारा
वलिदान हुआ यह तेरा वनकर
नाथ विना नहीं कोई दर
गुरुदेव……

जो कुछ है सब देन तिहारी
जोव भाव हरो नाथ हमारी
रहे न भक्ती मोरी अधूरी
नारायण गुरु करो तुम पूरी
गुरुदेव……

हर रंग में तूही हर रंग में तूही

हर रङ्ग में तूही हर रङ्ग में तूही।
हर दिल में है तू हर रूप में तू॥
वह देश नहीं जिसमें नहीं तू।
वह वेश नहीं जिसमें नहीं तू॥
जरा जान ले गुरू से तू ही,
हर रङ्ग......

कोई मंजिल नहीं जिसमें नहीं वो।
कोई राह नहीं जिसमें नहीं वो॥
जरा नैनों से देख तू वहीं,
हर रङ्ग......

हंसता है कोई उसमें भी वही।
कुछ कहता कोई उसमें भी वही॥
गुरू दया को समझ ले अब तो सही,
हर रङ्ग......

पहने है कोई फटे टुकड़े को।
ओढ़े है कोई शाल दुशाले को॥
हर रंग......

नाना रंग विरंगे शानों में।
दुखिया दीन घरानों में।।
दिलवर की पहिचान देखो यही,
हर रङ्ग......

हर संकल्प विकल्प और कामों में।
यश कीर्ति और नामों में।।
नारायण बताते वो ही वो ही,
हर रङ्ग......

नित्य याद करो—

रे मन ! उद्वेग को त्याग गुरु चरण को सेव। उद्वेग से कोई लाभ नहीं। शान्ति धारण कर। ज्ञान से दु:ख को काट दे।

दु:ख सुख जीवन की छाया है फिर इस छाया से क्यों भयभीत होता है। सुख को क्यों गले लगाता है। दु:ख से क्यों घृणा करता है उससे दूर भागने को क्यों कोशिश करता है।

प्रभु प्रेम की पी करके मदिरा

प्रभु प्रेम की पी करके मदिरा,
मदिरा में निज को खो देना।
मेरा प्रिय मुझमें बसता है,
मैं प्रिय में विलीन रहूं।
दोनों मिलकर एक हुये,
उसको कैसे दूर करूँ॥
प्रभु प्रेम......

त्याग दिया सब तेरा होकर,
सिर न चढ़ा चरणों में आकर।
नाम हुआ तो क्या होवे,
प्यारे को कैसे पाया करूँ॥
प्रभु प्रेम......

जब प्रेम की नदिया बाढ़ करे,
घूँघट के पट खोल देवे।
प्रियतम प्रेमी रह न सके,
ज्ञान का दीप जलाया करूँ॥
प्रभु प्रेम......

एक प्रभु बिन है न कोई;
दृष्टि में तब आया करे।
नारायण गुरु प्रेम मिले;
उनमें निज को पाया करूँ॥
प्रभु प्रेम......

हूं तो दासी तिहारी

हूं तो दासी तिहारी,
जोवन धन अभिराम।
मेरी विनय सुनो तुम प्यारे,
जन्म जन्म के नाथ हमारे।
हाथ बिकी बेदाम ॥
हूँ तो दासी......
अतुल प्रेम रस तुम सुखवारे,
अरुण मृदुल है चरण तिहारे।
अखिल प्रेम निधान
हूं तो दासी......
लोक मान मर्यादा खोकर,
शरण पड़ी हूं तोरे खातिर।
दया करो भगवान ॥
हूं तो दासी......
याद में दिल हो जाता पागल,
मिलने को मन होता आकुल।
याद करो घनश्याम ॥
हूं तो दासी......
रङ्ग में रङ्गो हूँ नाथ तिहारी,
हृदय चीर देखो वनवारी।
नारायण करुणा निधान ॥
हूं तो दासी......

प्रभु प्रेम की गंगा में

प्रभु प्रेम की गंगा में,
जीवन बना लो।
जीवन बना कर ज्योति जगा लो ॥
अगम ज्योति की धारा है ये,
तन मन धन उज्ज्वल करती ये,
लाख पापी भी अपना जीवन बना ले ॥
प्रभु प्रेम……

अनन्त अनादि सनातन है ये,
जीवन देती लाखों को ये,
शीतल सिंधु में निज को जगा लो ॥
प्रभु प्रेम……

कोटि कोटि ये पाप को नासे,
ब्रह्म अनन्त इसी से भासे,
वसुधा में बूटी सबको पिला दो ॥
प्रभु प्रेम……

नारायण गुरू ज्ञान प्रकाशे,
चरण के दास को भक्त प्यासे,
जीवन का बिगड़ी अब भी बना लो ॥
प्रभु प्रेम……

जब तू ही तेरा न हुआ

जब तूही तेरा न हुआ,
किसकी आश लगाये तू ।
चार दिनों का जीवन है,
किससे प्रीति लगाये तू ।। जब ।।

हे भक्तों के दीवाने हरी,
चरणों में दासी आय परी ।
तुम्हीं से मिलने आई हूं,
कैसे दूर हटाये तू ।। जब ।।

जग की सारी चाह हटी,
झूठीं सारी रीति मिटी ।
काँटों के पथ पर चल करके,
कैसे दूर कराये तू ।। जब ।।

जग में नहीं है कोई किसी का,
चाहिये केवल दया आपकी
यही लगाये नय्या पार,
नारायण पार लगाये मझदार ।।जब।।

दरबार तेरा आबाद रहे

दरबार तेरा आबाद रहे।
दास का दामन भर दे मेरे॥

दास चरण की धूल तेरे।
गान तेरा ही गाया करे॥
दया की दृष्टि कर दे हरे॥ दास॥

करतार तू ही रखवार तू ही।
दल में परलय कार तू ही॥
हाथ लगा पतवार तू ही॥ दास॥

दर्द भरे जो तुझे बुलाये।
इक छिन में ही तू आ जाये॥
बोझिल पाप हटाते आये॥ दास॥

सुख संपत्ति का भंडार भरे।
भोग मोक्ष को साथ धरे॥
नारायण लीला काहे करे॥ दास॥

गुरू का नाम जपो काम छोड़ के

गुरू का नाम जपो काम छोड़ के।
जा विधि चाहे गुरू ता विधि होय के॥

प्रेम का तू हो सिन्धु।
ज्ञान का तू ही इन्दु॥
राम नाम जपिये ज्ञान से जान के॥
जा विधि……

ब्रह्म से ही सृष्टि है।
सृष्टि में ही इष्ट हैं॥
राम रूप राखो दृष्टि, गुरू को पाय के॥
जा विधि……

हर कण में गुरू रमे।
उन्हीं से हैं सब बने॥
प्रेम से गुरू सेवा, ज्ञान से जान के॥
जा विधि……

नारायण नाम पड़ा
भक्तों से तू भी बड़ा॥
आदि अंत जगत तू ही, विश्व का रचाय के॥
जा विधि……

अपने गुरू का गान गाऊँ

अपने गुरू का ज्ञान गाऊं,
ऐसो पाऊँ कौन उदार प्रभु जी

अंध कूप में पड़े जीवों का
जगती में पड़े दीन जनों का
तज बैकुंठ उबारो ।। ऐसो ।।

कृष्ण रूप में धर ब्रज में आयो
राम रूप में अवध में जायो
रावण भार उधारों ।। ऐसो ।।

भक्त हेतु तप कीन्हों स्वामी
गुरू नाम की अमृतवानी
देकर कष्ट निवारो ।। ऐसो ।।

गजब दया है तेरी प्यारे
अज्ञान का घूँघट तूही उघारे
नारायण दास तिहारो ।। ऐसो ।।

जरा सद्गुरु को तो हेर

जरा सद्गुरु को तो हेर
विषयों से तू मन को फेर

हरी हरी की रटन लगा ले
जख्मी दिल में जख्म वना ले
फिर कैसे करे वो वेर ॥ जरा ॥

कैसी ये आहें अणी सी उठती
बेदर्दी के दर्द को भरती
छिपे रहेंगे कितनी बेर ॥ जरा ॥

दर्द ना क्या हरी से न मिला दे
जन्म जन्म का दाग मिटा दे
कैसे होगी अव अंधेर ॥ जरा ॥

स्वांग को छोड़ के निज को देखो
नारायण को निज में देखो
रात में हो जायेगी भोर ॥ जरा ॥

हे प्राँणनाथ हमारी सुनिये

हे प्राँणनाथ ! हमारी सुनिये।
सदा सदा से विरद सुना है
भक्तों की तुम पूरण करिये।
हे प्राँण……॥

दृढ़ भक्ती मोरी सदा बनी रहे
निश्चय को प्रभु पूरा करिये
हे प्राँण……॥

चरण कमल मोरे हिय बसा रहे
मूरत तेरी सन्मुख रहिये
हे प्राँण……॥

अखिल विश्व के नाथ शिरोमणि
नारायण चरण में रहिये
हे प्राँण……॥

यदि प्यारे को पाना चाहो

यदि प्यारे को पाना चाहो
दुविधा के पट खोल

व्याप रहा प्रीतम जग माहि
वेद बताते अन्तर नाहि
कर लि हीरों का अब मोल
दुविधा……

भव रोग की भीषण ज्वाला
इससे हो गया तू भी काला
गुरू नाम का अमृत घोल
दुविधा……

प्राण—प्राण में तेरी ज्योति
गुरू दया से इसे संजोती
तुझ में ही राग टटोल
दुविधा……

गुरू निष्ठा की लगा समाधि
झूठा जग यह झूठी उपाधि
नारायण देवे भेद का खोल
दुविधा……

रे बावरे ! कब तक डोले

रे बावरे ! कब तक डोले भागे हाट में
धन की राशी काम न आये
भोले नर तू क्यों भरमाये
ना कफन भी जाये साथ में
रे बावरे....

कुल परिवार जगत के अपने
अंत में होये सब कुछ सपने
निज करनो ही जाय साथ में
रे बावरे....

सांची मीत न काहू की है
तज रत्नों को भटक रहा है
लिये विषयों की वृथा साथ में
रे बावरे......

शुद्ध हृदय निर्मल प्रीती से
क्षण में मिलता तू प्रीतम से
नारायण मिलता सत्य राह में
रे बावरे....

मेरे अंग अंग में राग रगाऊँ

मेरे अंग अंग में राग रगाऊँ
मेरे अंग अंग में नाम गराऊ

सुखद गुरू की संगति निश दिन
मधुर मूर्तों की छवि से निश दिन

अंग अंग को तुझ पर वारूँ ।। मेरे अंग ।।

तज कुसंग को आत्तम पथ हो
गुरू दया का सद् अनुभव हो

अर्पना सब तुझ पर वारूँ ।। मेरे अंग ।।

दीन दुखी और हरी भक्तों का
भाव सदा हो निज आतम् का

शक्ती प्रभु जो तुझसे पाऊँ ।। मेरे अंग ।।

परम पिता गुरू की सत्ता पर
अभिमान रहित अरिणपर

नारायण चरनन को ध्याऊँ ।। मेरे अंग ।।

ऐसे रंग में रंग ले मन को रे

ऐसे रंग में रग ले मन को रे
दूजा न रंगवा भायेगी
जगत प्रपंच है झूठा सारा
इसका है नहीं कोई पारा
हरी हा मन में रमाये ।। ऐसे ।।
प्रेम प्रीति की अजब कहानी
एक ही भाये दूजा न सुहानी
जीवन भले हो विकाये ।। ऐसे ।।
सद्गुरु कैसा अनोखा हीरा
चख लो जरा तो होये पीरा
अमृत प्याला पिलाये ।। ऐसे ।।
नारायण सर्वेश सुधा निधि
लीला गुण रस सुन्दर विधि
ज्ञान हो तेरा गाये ।। ऐसे ।।

●●

तेरी छवि को हृदय बसाकर

तेरी छवि को हृदय बसाकर
सर्वस्व तुझे चढ़ाऊँ
गुरुवर सर्वस्व तुझे चढाऊँ ।

शक्ती नहीं है कुछ भी मुझमें
पूजा क्या कर पाऊँ
प्रभु प्रेम की अकथ कहानी
कैसे अपना कर पाऊँ ।। गुरुवर ।।

चढ़ी भावना युगल चरण में
क्या अनुभूति सुनाऊँ
सदा रहो तुम मेरे स्वामी
इतना ही कर पाऊँ ।। गुरुवर ।।

बार बार मन कहता प्रभु जी
तुझमें ही मिट जाऊं
सेवक होकर दर पर बैठे
सेवा रूप बन जाऊं ।। गुरुवर ।।

मेरी साधना साध्य तुम्हीं हो
नारायण चरण चढ़ाऊँ
आत्म तत्व को पाकर के भी
मस्तक सदा नवाऊँ ।।
गुरुवर सर्वस्व तुझे चढ़ाऊं ।।